संत थॉमस स्कूल, धुर्वा, रांची

सत्र 2020 - 21

कक्षा - 8 (विषय - हिंदी) पुस्तक - मंथन

पाठ - 6, स्वामी विवेकानंद

अभ्यास

प्रश्न 1 - प्रश्नों के उत्तर दीजिए (मौखिक): -

(क) स्वामी विवेकानंद का बचपन का नाम नरेंद्रनाथ था।

(ख) स्वामी विवेकानंद ने अपना गुरु रामकृष्ण परमहंस को बनाया।

(ग) विश्व धर्म सम्मेलन अमेरिका में हुआ था।

(घ) विवेकानंद ने अमेरिका के नगरों में वेदांत का प्रचार किया।

(ड.) उनके प्रति श्रद्धा भक्ति बढ़ जाने के कारण कुछ लोग शिष्य बनकर स्वामी जी के साथ ही भारत आ गए थे।

प्रश्न 2 - लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर (लिखित): -

(क) नरेंद्रनाथ की प्रतिभा से प्रभावित होकर उनके कॉलेज के अध्यापक उन्हें कहा करते थे कि 'नरेंद्रनाथ सचमुच ही जीनियस है। मैं बहुत स्थानों पर गया हूँ परंतु इसके अनुरुप बुद्धि और बहुमुखी प्रतिभा कहीं नहीं देखी।'

(ख) नरेंद्रनाथ ने ब्रह्मसमाज को अपनाया।

(ग) विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की।

(घ) विवेकानंद स्मारक कन्याकुमारी में समुद्र के मध्य स्थित है।

प्रश्न 3 - दीर्घउत्तरीय प्रश्नों के उत्तर: -

(क) स्वामी विवेकानंद ने कोलकाता के मेट्रोपॉलिटन स्कूल से प्रथम श्रेणी में एंट्रेंस की परीक्षा पास की। इसके पश्चात जनरल असेंबली कॉलेज से एफ0ए0 तथा बी0ए0 की शिक्षा प्राप्त की।

(ख) स्वामी विवेकानंद 'विश्व धर्म सम्मेलन' में भाग लेने इसलिए गए क्योंकि अनेक लोगों ने स्वामी जी की प्रतिभा से प्रभावित होकर उनसे इस सम्मेलन में भाग लेने का आग्रह किया था।

(ग) स्वामी विवेकानंद ने मंच पर जाकर 'मेरे अमेरिका के बहनों तथा भाईयों' के संबोधन से भाषण प्रारंभ किया वैसे ही तालियों के गड़गड़ाहट से सम्मेलन स्थल गूँज उठा। स्वामी जी के विद्वतापूर्ण भाषण को सुनकर श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो गए। उनकी चमत्कारिक भाषणों और प्रभावशाली व्यक्तित्व से धर्मसम्मेलन के वे सबसे प्रिय वक्ता बन गए।

(घ) स्वामी विवेकानंद की वाणी तथा व्यक्तित्व बहुत आकर्षक था। स्वामी जी जहाँ भी जाते थे, लोग उनकी प्रतिभा, आकर्षक व्यक्तित्व, कांतिपूर्ण मुखमंडल और चुंबकीय दृष्टि से प्रभावित

हुए बिना नहीं रहते थे। उनका रूप जितना भव्य और सुंदर था, उतने ही वे सरल और विनम्र थे। वे सभी को स्नेह और आदर देते थे।

(ङ.) कन्याकुमारी में समुद्र के मध्य में 'विवेकानंद स्मारक' उनकी स्मृतियों को संजोए रखने के लिए बनाया गया। क्योंकि इसी स्थान पर उन्होंने अमेरिका की यात्रा करने से पूर्व ध्यान किया था।